ॐ स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता ॐ

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 3; Number : 2
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

मूल्य–बोध की चेतना को जगाना परम आवश्यक है। एक मूल्य से कभी समाज नहीं चलता। केवल सामाजिक मूल्यों की पूर्ति से कभी समाज नहीं चलता। इसी प्रकार केवल मानसिक, आर्थिक या बौद्धिक मूल्यों की पूर्ति से कभी समाज नहीं चलता। समाज एक संगठित और समन्वित तत्त्व है। उसके लिये सभी मूल्यों की पूर्ति जरूरी है। आदमी एकांगी दृष्टि से कह देता है कि समाज अर्थ की पूर्ति से सुव्यवस्थित चल सकता है। सारा भार अर्थ पर डाल दिया जाता है। क्या अर्थ की पूर्ति करने वाले व्यक्ति में कला, संगीत और साहित्य के प्रति रूचि नहीं होती? क्या उसमें अन्य आकांक्षा और कामना नहीं होती? आदमी यंत्र नहीं है। उसको यंत्र मानकर व्यवहार नहीं किया जा सकता। हमें उसके व्यवहार, संवेग और मौलिक मनोवृत्तियों के आधार पर उसके साथ व्यवहार करना होगा। वह किसी यंत्र का पुर्जा नहीं है, ईंट–पत्थर नहीं है कि जहां चाहे वहां फिट कर दें। वह चेतनावान प्राणी है, जिसकी अपनी रूचि है, आकांक्षा और कामना है। ऐसी स्थिति में एकांगी दृष्टि से नहीं सोचा जा सकता। साम्यवादी प्रणाली में मूल्यों की उपेक्षा की गई। उसका परिणाम यह आया कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाया। जिन लोगों ने प्रजातान्त्रिक प्रणाली में भी आर्थिक मूल्यों को अतिरिक्त मूल्य दिया, वहां असंतोष और पागलपन बढ़ा। जहां आध्यात्मिक मूल्यों को अतिरिक्त स्थान दिया जाता है वहां गरीबी बढ़ सकती है, परतंत्रता भी आ सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि आदमी का दृष्टिकोण यथार्थवादी बने। जिसका, जिस स्तर पर, जितना मूल्य हो उसको उतना मूल्य दिया जाये। **आचार्य महाप्रज्ञ**

विद्यार्थियों ने सीखे जीवन विज्ञान के प्रयोग

लाडनूँ 29 फरवरी। जैन विश्व भारती परिसर भ्रमण पर आए रतनीदेवी सेठिया माध्यमिक विद्यालय, सुजानगढ़ के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनिश्री धनंजय कुमारजी ने कहा कि जीवन विज्ञान एक सर्वांगीण शिक्षा पद्धति है। जीवन को सही तरीके से जीने हेतु इसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ प्रायोगिक अभ्यास भी करवाये जाते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को ईमानदारी, नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा आदि मूल्यों का महत्व समझाते हुए कहा कि बड़े होकर आप डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, प्रशासक आदि बनें पर इसके साथ–साथ अच्छे इन्सान जरूर बनें। **क्रमश...**

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

लाडनूँ 14 फरवरी। जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.02.2012 को विश्वविद्यालय के सभागार में जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कोलकाता से आए

जीवन विज्ञान प्रवक्ता विक्रमसिंह सेठिया द्वारा जीवन विकास एवं व्यक्तित्व विकास के संदर्भ में पॉवर प्वाइंट के माध्यम से सांगोपांग प्रस्तुति दी गई। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के सभी विभागों के छात्र–छात्राओं सहित आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया। कार्यशाला के प्रारम्भ में श्री सेठिया का शॉल द्वारा सम्मान कर कुलसचिव प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा ने जीवन विज्ञान के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के निदेशक राजेन्द्र खटेड़, जीवन विज्ञान अकादमी से ओमप्रकाश सारस्वत, हनुमान मल शर्मा, सहायक कुलसचिव अमितसिंह राठौड़, कालू कन्या महाविद्यालय से डॉ. (मुमुक्षु) शान्ता जैन, वीणा जैन सहित विश्वविद्यालय के अनेक गणमान्य आचार्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन एवं आभार ज्ञापन प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं योग विभाग के व्याख्याता युवराजसिंह ने किया।

क्रमश...दिनांक 28 फरवरी को कक्षा 1 से 3 तक के 140 विद्यार्थियों तथा 5 शिक्षकों को आचार्यश्री तुलसी स्मृति स्मारक पर अणुव्रत गीत आसन–प्राणायाम, महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा एवं संकल्प शक्ति के प्रयोगों का अभ्यास करवाया गया। इसी प्रकार दिनांक 29 फरवरी को कक्षा 4 एवं 5 के 90 विद्यार्थियों एवं 5 शिक्षकों को तुलसी अध्यात्म नीड़म में प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान की विविध गतिविधियों का प्रायोगिक अभ्यास करवाया गया। प्रशिक्षण कार्य में प्रशिक्षक रामेश्वर शर्मा एवं महेन्द्र कुमावत का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने जैन विश्व भारती परिसर स्थित आर्ट गैलेरी का अवलोकन कर प्रसन्नता व्यक्त की। शिक्षकों ने कहा कि शैक्षिक भ्रमण के साथ–साथ जीवन विज्ञान के प्रयोगों से विद्यालय को दोहरा लाभ मिला है।

कविता

जीवन का आधार

जीवन विज्ञान जीना सीखाता है, आदतों में परिष्कार लाता है।
स्वभाव बदलता है, विचार बदलता है, बदलता है जीवन व्यवहार,
क्योंकि, जीवन विज्ञान ही है जीवन का आधार।।
मूल्यपरक शिक्षा का दर्पण है, नैतिकता में जीवन का अर्पण है।
पर्यावरण–शिक्षण है, भोजन–प्रशिक्षण है, विश्वमैत्री का होता विस्तार,
क्योंकि, जीवन विज्ञान ही है जीवन का आधार।।
कार्य–कौशल का विकास होता है, विधायक भावों का प्रकाश होता है।
योगासन सिखाता है, अनुप्रेक्षा कराता है, तनावमुक्ति का है उपहार
क्योंकि, जीवन विज्ञान ही है जीवन का आधार।।

उपासक उत्तमचन्द बोहरा, आमेट

भव भावना : मुनि किशनलाल

भव का अर्थ है संसार में भ्रमण करना। उसकी परिणितियों को जानना। जन्म और मृत्यु को धारण करना। ऐसी कोई योनि और स्थान नहीं है, जहां जीव ने जन्म और मृत्यु को धारण नहीं किया हो। जिसका जन्म होता है, उसकी मृत्यु निश्चित होती है। यह ऐसा चक्र है जिससे छुटकारा पाने का एक ही मार्ग है – भव भावना का अनुचिन्तन करना। क्या मैं विभिन्न योनियों में कष्ट पाता रहूंगा? या इस जन्म–मरण के चक्र का अन्त कर निर्वाण को उपलब्ध हो जाऊंगा। कोई भी द्रव्य ऐसा नहीं है जो पैदा होता है, स्थिर रहता है और नष्ट नहीं होता हो। जो पदार्थ है, जिसका अस्तित्व है – उत्पन्न होता है, स्थिर रहता है और नष्ट हो जाता है। यह महावीर का दर्शन है।

विज्ञान ने भी इस सच्चाई को स्वीकार किया है। कोई भी पदार्थ सदैव स्थिर नहीं रहता, समय के साथ नष्ट हो जाता है। नष्ट भी सर्वथा नहीं होता, मात्र परिवर्तन होता है। परिवर्तन प्रत्येक वस्तु में होता है, चाहे वह जीव अथवा अजीव हो। जीव को नाना योनियों में परिभ्रमण करना होता है। जन्म का दुःख, मृत्यु का दुःख, विभिन्न योनियों में जीवन व्यतीत करने का दुःख। यह पूरा संसार दुःखमय है। मैं कैसे इन दुःखों से, जन्म–मृत्यु के चक्र से, मुक्त हो पाऊंगा? भ्रमण का मूल कारण मोह है। मोह की मूर्च्छा को तोड़ने का प्रयोग है – भव भावना का प्रयोग। भव–भावना से जीव जन्म–मरण से मुक्त हो जाता है। **प्रयोग करें–**

1. सुखासन में शरीर को स्थिर, शिथिल कर कायोत्सर्ग करें।
2. तीन बार महाप्राण ध्वनि का प्रयोग करें।।
3. धीरे–धीरे नीले रंग का श्वास लें, कंठ पर नीले रंग का ध्यान करें।
4. मन ही मन चिन्तन करें – जन्म और मृत्यु दुःख की खान है। पत्नी, पुत्र, परिवार सब स्वार्थी हैं। मोह के कारण मृत्यु भव भ्रमण करना होता है। मैं मूर्च्छा को छोड़ रहा हूं, परित्याग कर रहा हूं, परिवार का त्याग कर रहा हूं। संन्यासी बन कर मोह का परित्याग करता हूं। ऐसी भावना मन ही मन करें।
5. महाप्राण ध्वनि से प्रयोग सम्पन्न करें।

निज पर शासन : फिर अनुशासन – आचार्य तुलसी

जीवन विज्ञान केरियर क्लब द्वारा जीवन विज्ञान प्रचार

भिलाई। छत्तीसगढ़ जीवन विज्ञान अकादमी, दुर्ग–भिलाई के तत्वावधान में गठित जीवन विज्ञान केरियर क्लब द्वारा जीवन विज्ञान के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा है। क्लब द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कलिंगपुर (गुण्डरदेही) में 5 जनवरी को रंगझांझर कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए गये, जिससे लगभग 1000 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। विद्यालय प्राचार्य ने इस अवसर पर कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोग हमारे विद्यालय में नियमित चल रहे हैं और इससे विद्यार्थियों के अनुशासन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। इसी प्रकार क्लब द्वारा 12 जनवरी को ग्राम ईरागुढ़ा के शासकीय हाई स्कूल एवं पूर्व माध्यमिक शाला में दंत रोग परीक्षण परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 300 विद्यार्थियों ने लाभ प्राप्त किया। इससे पूर्व सभी विद्यार्थियों ने अणुव्रत गीत का सामूहिक उच्चारण कर, समपादासन, ताड़ासन, कोणासन, पादहस्तासन एवं महाप्राण ध्वनि का प्रदर्शन किया। जीवन विज्ञान क्लब के सुरेशचन्द बरड़िया ने बताया कि कार्यक्रम को सफल बनाने में पोरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट के साथ–साथ प्राचार्य टी.एस.कोल्हे, गुलाबचन्द चौपड़ा, डॉ.समीर बरड़िया, डॉ. पल्लवी, पी. आर. साहू, के.के. शुक्ला, भीकमलाल चन्दाकर, उदयराम पटेल, विद्यालय स्टाफ एवं जीवन विज्ञान अकादमी दुर्ग, भिलाई का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

लाडनूँ 27 फरवरी। जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ के तत्वावधान में दिनांक 13 से 19 फरवरी 2012 तक जीवन विज्ञान प्रचार–प्रसार की दृष्टि से जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूँ सहित विभिन्न विद्यालयों एवं संस्थाओं में **जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशालाओं** का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विक्रम सेठिया ने पॉवर प्वाइंट के माध्यम से अपनी प्रस्तुति देते हुए कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये लक्ष्य निर्धारित कर आगे बढ़ना चाहिए। लक्ष्यहीन व्यक्ति दुर्बल, पराश्रित, रहकर अर्थहीन जीवन जीता है। श्री सेठिया ने विद्यार्थियों को स्मरणशक्ति, एकाग्रता एवं आत्म–विश्वास सुदृढ़ करने के उपाय बहुत तार्किक एवं वैज्ञानिक तरीकों से रोचकता के साथ समझाए। जीवन विज्ञान अकादमी के संयुक्त निदेशक ओमप्रकाश सारस्वत ने जीवन विज्ञान की मानव जीवन में उपयोगिता पर विचार रखे।

विभिन्न संस्था प्रधानों ने इस प्रकार के कार्यक्रमों को विद्यार्थियों के लिये उपयोगी बताते हुए स्वागत एवं आभार प्रदर्शित किया। उक्त अवधि में आयोजित कार्यशालाओं एवं लाभान्वितो की संख्या निम्नानुसार है – (1) 13 फरवरी को श्री ज्ञानोदय पब्लिक स्कूल, बिसाऊ,(झुंझुन), 14 फरवरी को जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ, 15 फरवरी को सूरतगढ़ डिग्री कॉलेज, सूरतगढ़, 16 फरवरी को आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, गंगाशहर, 17 फरवरी को श्रीमती केशरदेवी सोती उ.मा. आदर्श विद्या मंदिर एवं कमल कुंज, चुरू, 18 फरवरी को श्री जैन केशर बालिका मा.वि., चुरू तथा 19 फरवरी को प्रजापिता ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय, चुरू एवं आदर्श विद्या मंदिर में अभिभावकों की कार्यशाला।

विद्यार्थी संस्कारों को न भूलें : मुनि रमेशकुमार

कारोई 7 जन.। ''वर्तमान युग में शिक्षा का स्तर बहुत बढ़ा है परन्तु शिक्षा के साथ संस्कारों का युगपत योग होने से ही जीवन निर्माण होता है। विद्यार्थी अपने मूलभूत संस्कारों को न भूलें। आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ का जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण का अनूठा अवदान है। ये विचार आचार्यश्री महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती मुनि रमेशकुमार ने विनायक विद्यापीठ में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने जीवन विज्ञान को छात्र–छात्राओं के सर्वांगीण विकास का उपक्रम बताया। विद्यालय प्राचार्य राधेश्याम पारीक ने भी अपने विचार व्यक्त किये। विद्यालय संस्थापक देवेन्द्र कुमावत, बालसंत बलराम, हर्षराम तथा शिवांस ने मुनिवृन्द का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर कोटा से नथमल नाहटा, अशोक भंसाली तथा प्रहलाद सिंह विशेष रूप से उपस्थित थे।

पाठकों से विनम्र अनुरोध – समस्त सुधी पाठकों एवं संस्थाओं से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने मूल्यवान सुझाव समय–समय पर हमें भेजकर लाभान्वित करें एवं अपने क्षेत्रों में आयोजित जीवन विज्ञान शिविरों एवं गतिविधियों की समुचित रिपोर्ट और फोटो जीवन विज्ञान : ई–न्यूजलेटर के आगामी अंकों में प्रकाशनार्थ भेजें। संपादक।